

खड़गपुर कारखाना दर्पण

2022

खड़गपुर कारखाना दर्पण



100



राजभाषा

भारतीय रेलवे

12/16/2022



मुख्य कार्य प्रबंधक का संदेश

पत्र पत्रिकाएं किसी भी संस्थान के लिए एक महत्वपूर्ण सृजनात्मक मंच हैं। कारखाना के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी सृजनात्मक प्रतिभा को कारखाना दर्पण के माध्यम से अभिव्यक्त करना चाहिए।

आजकल डिजिटल पत्रिकाओं का दौर चल रहा है। मोबाइल फोन की सहज उपलब्धता के कारण एक क्षण में दुनिया के किसी भी कोने में सूचना एवं समाचार पहुँचाए जा सकते हैं। तकनीक का सदुपयोग करते हुए किसी भी भारतीय भाषा में लिखना अब आसान है।

राजभाषा की इस पत्रिका को कारखाना में होने वाले उल्लेखनीय कार्यों का दर्पण बनाया जा सकता है। कारखाना में होने वाले नये काम, कर्मचारियों के हित से जुड़े विषयों पर आलेख लिखा जा सकता है।

इस पत्रिका के माध्यम से मैं सभी को राजभाषा में अधिक से अधिक काम करने के लिए नई तकनीक के साथ चलने का आग्रह करता हूँ।

उप मुख्य राजभाषा अधिकारी और उनकी संपादकीय टीम को बधाई। पत्रिका का निरंतर प्रकाशन सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

बिजय कुमार रथ ,खड़गपुर दिसंबर 2022

ii



खड़गपुर रेल कारखाना में राजभाषा के प्रचार प्रसार में पुस्तकों एवं पत्र पत्रिकाओं के महत्व को नये सिरे से रेखांकित करना है। अपने कार्यक्षेत्र के अनुभव को यदि आप लिखते हैं तो यह कई लोगों के लिए मार्गदर्शक साबित हो सकता है। खड़गपुर कारखाना दर्पण को पुनः डिजिटल माध्यम से प्रकाशित करते हुए दक्षिण पूर्व रेलवे की वेबसाइट पर अपलोड किया जाना है। इसमें साहित्यिक कविता कहानी संस्मरण के अलावा कर्मक्षेत्र के अनुभव भी शामिल किए गए हैं।

राजभाषा अनुभाग के सौजन्य से होने वाले कार्यक्रमों की रिपोर्ट के अलावा रेल कारखाना में होने वाली खेलकूद एवं सांस्कृतिक गतिविधि को भी स्थान दिया गया है।

आधुनिक जीवन शैली में रोग किसी को भी घर लेते हैं। स्वस्थ जीवन शैली के बारे में आलेख इस पत्रिका के सभी अंको में आते रहेंगे। मैं अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अनुरोध करना चाहूँगा कि वे विभिन्न विषयों पर लिखते हुए अपनी अभिव्यक्ति क्षमता को बढ़ाते रहें।

संपादकीय टीम एवं लेखकों को तथा रिपोर्ट संकलन कर्तागण को बधाई। आप सबका प्रयास सफल हो।

अब्दुल हई

उपमुराधि खड़गपुर रेल कारखाना



रेल हमारा घर है

नरेन्द्र कुमार मीना

सहायक लोको पायलट

बजी है, घंटी लग गयी इयूटी
टांग के बस्ता हम निकल जाते हैं।
कब वापस आयेगें नहीं जानते,
“हम लोको पायलट हैं साहब सब सह जाते हैं”
फूँक मारकर जाँच परखकर
फिर हम नाँच लगाते हैं।
गति प्रतिबंध का पालन करते
बस SPAD ना हो जाये, डर इसी बात का होता है ।
भरोसे हमारे देश हमारा
जान माल को पीछे लादे।
कभी है भूखे कभी है प्यासे
मंजिल तक हम ले जाते हैं ॥
“हम लोको पायलट हैं साहब सब सह जाते हैं”

ना सुबह होती है, ना शाम है
ना चैन होता है, ना आराम है
जब लोग जाड़े की रात में कम्बल में सोते हैं
तब हम ठिठुरती ठंड में, खड़ंग इंजन में होते हैं ।

रेल हमारा घर है, पटरियों के हम राही हैं
चलती रहे गाड़ी हमारी बस इतना ही चाहते हैं।
G&SR है गीता इसका गीत गाते हैं
दिमाग चौकन्ना, आँखे खोलकर अपना फर्ज निभाते हैं।
“हम लोको पायलट है साहब सब सह जाते हैं।

तुम्हारी होलीदीवाली और मने- दुर्गा पूजा

जो अपना त्योहार भूल जाता है -
और ये जिम्मेदारी उठाता है।
वे सक्षम रेलकर्मि लोको पायलट कहलाता है क्या समझे तकलीफ हमारी
जो बेईमानी की खाते है।
हमारी एकएक पाई मेहनत की-
जो ईमान से कमाते है, साहब सब सह जाते हैना सैनिक है ना वर्दीधारी
फिर भी देश सेवा में बलि चढ़ जाते है
जनाब लोको पायलट होना इतना आसान नहीं
हम लोको पायलट है साहब सब सह जाते हैं।



लोको पायलट का जीवन

लोको
पायलट
का
जीवन
शिवधर
पाण्डेय

साहित्य

सब चलाएँ
लाखों की,हम करोड़ो वाली
चलाएंगे।
उनका रास्ता पत्थर का,हम
लोहे वाली पर दौड़ाएंगे।
एक पैसे को भी महंगे थे हम
घरवालों को वो अलग है,
अब करोड़ो की जिम्मेदारी भी
निभाएंगे ॥

भूल गए आशिकी
सारी,अब गाड़ी
चलाने की
बेकरारी है।
कुछ पहिए वाली
तो बच्चे चलाते हैं,ये तो शेरों
वाली सवारी है॥
मिलें जब पूर्वजों से-----
---अपनें,
तो उनका एक ही इशारा हुआ
।

जिम्मेदार बनेगा बच्चा घर
वालों का बिगाड़ा हुआ,

बिस्तर पर चाय मंगवाने
वालो को, पटरी पर बैठ के
पीना होगा,

सुखा न पाएगा कोई
कपड़ा, इतना तुम्हें पसीना
होगा,

घर नहीं बाबू, तुम्हें, तुम्हें
प्लेटफॉर्म पर ही नहाना होगा,
दोपहर का बनाया खाना, तुम्हें
रात दो बजे भी खाना होगा,
शेरों की सवारी कहते हो, शेर
ऐसे ही होते हैं,

तुम जैसे मेमने जो खुद को
शेर समझते हैं,

बाबू कोई केबिन का कोना
पकड़ कर रोते हैं।

लाल रंग का खौफ ऐसा देखते
ही रुक जाएंगे,

मन में बस यही संदेश उठा है
लाल जोड़े में उसे वरमाला
कैसे पहनाएंगे।

हम हैं नहीं सीमा पर, फिर भी
जीवन में बहुत गर्दी है,
हम उस परिवार के हैं, जो
अर्थव्यवस्था के दर्जी है।

मोबाइल नं.-
70070630

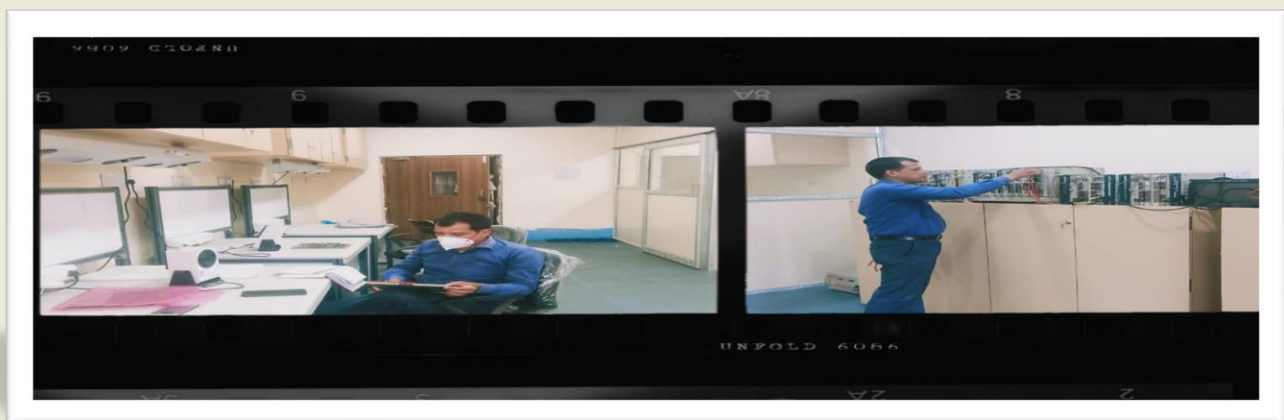
इलेक्ट्रॉनिक लैब/ ईआरएस/पीओएच

विद्युत उपकरणों का रखरखाव एक महत्वपूर्ण कार्य है। उपकरणों के ठीक से काम करने के लिए आवश्यक है कि उनकी देखरेख ठीक ढंग से की जाय। यह ERS-POH में स्थित एक नया अनुभाग है जो 3 फेज इंजन के लिए काम करता है।

इस अनुभाग में 3 फेज इंजन के SR एवं VCU इलेक्ट्रॉनिक्स डिवाइस की जाँच की जाती है। इस अनुभाग में काफी सुरक्षा एवं सफाई का ध्यान रखा जाता है। इलेक्ट्रॉनिक लैब को आर डी एस ओ के टेक्निकल सर्कुलर 135 दिशानिर्देशों के अनुसार विकसित किया गया है।

ई आर एस पी ओ एच विभाग में ई-लैब का अवसंरचनात्मक विकास 2019 से चल रहा है कुछ नये उपकरणों के साथ निरंतर विकास जारी है। इसके विकास की संभावनाएँ बहुत हैं और कालक्रम में यह ई लैब विकसित होती जाएगी।

रिपोर्ट प्रस्तुति - प्रकाश रंजन/ वरि. तकनीशियन



रेल खेलकूद की भाग लेना लिए एक कामन वेल्थ युवतियों का है। दो वर्ष के सेरसा / द्वारा आयोजन किया गया। आयोजित इस आयोजन इसमें अधिकारियों एवं सहभागिता रही। और से मुकाप्र श्री बिजय खिलाड़ियों को संबोधित



कर्मचारियों का प्रतियोगिताओं में स्वस्थ तन मन के अच्छा काम है। गेम्स में युवाओं एवं प्रदर्शन सराहनीय अन्तराल के बाद

खड़गपुर कारखाना स्पोर्ट्स मीट का

अप्रैल के प्रथम सप्ताह में खेल के नौ प्रकार थे। कर्मचारियों की उत्साहजनक सेरसा/खड़गपुर कारखाना की कुमार रथ ने अतिथियों और किया।

इस कार्यक्रम की एक झलक चित्रों के माध्यम से दी गई है।

रिपोर्ट – मोन्टी बारी/ लेखा सहायक

44वीं अखिल भारतीय अंतर रेलवे ब्रिज चैम्पियनशिप 2022-23 का आयोजन दक्षिण संस्थान, खड़गपुर में 28 से 30 अक्टूबर, 2022 तक एसईआरएसए/केजीपीडब्ल्यू द्वारा किया गया था। उद्घाटन दिवस पर इस अवसर पर माननीय मुख्य अतिथि श्री इशाक खान, अध्यक्ष, एसईआरएसए और पीसीईई/एसईआर, श्री मोहम्मद शुजात हाशमी, अध्यक्ष, सेरसा/केजीपी और डीआरएम/केजीपी, श्री बीके रथ, अध्यक्ष, सेरसा/केजीपीडब्ल्यू और सीडब्ल्यूएम/केजीपीडब्ल्यू और अन्य सम्मानित गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। अंतिम दिन चैम्पियनशिप के पुरस्कार डॉ. पी. के. मजूमदार, एचएसजी/एसईआरएसए और एसीएचडी (रेडियोलॉजी) सीएच/जीआरसी द्वारा सम्मानित पुरस्कार विजेताओं को प्रदान किए गए।

(रिपोर्ट -मोन्टी बारी)



यह नाम सुनते ही दिल और दिमाग में भय का संचार हो जाता है क्योंकि एक समय पर आकर कोरोना वायरस का इलाज मिल सकता है लेकिन कैंसर का संपूर्ण उपचार अब तक नहीं बन पाया है लेकिन अगर जानकारी और सही उपचार हो इसे पूरी तरह कंट्रोल किया जा सकता है

क्या है कैंसर ?

मानव शरीर असंख्य कोशिकाओं /सैल्स से बना हुआ है और इन कोशिकाओं में निरंतर विभाजन होता रहता है । यह एक सामान्य प्रक्रिया है जिसमें नई कोशिका बनती है और पुरानी मर जाती है। इस तरह शरीर स्वस्थ बना रहता है। कभी-कभी जब शरीर के किसी विशेष अंग की कोशिकाओं पर शरीर का नियंत्रण बिगड़ जाता है और कोशिकाएं बेहिसाब तरीकेसे बढ़ने लगती हैं, सामान्य कार्य बाधित हो जाता है इस स्थिति को कैंसर कहा जाता है।

कैंसर की शुरुआत कैसे होती है ?

मानव शरीर में जब कोशिकाओं के जीन में परिवर्तन होने लगता है, तब कैंसर की शुरुआत होती है। ऐसा नहीं है कि किसी विशेष कारण से ही जीन में बदलाव होते हैं, यह स्वयं भी बदल सकते हैं या फिर दूसरे कारणों की वजह से ऐसा हो सकता है, जैसे- गुटका-तंबाकू जैसी नशीली चीजें खाने से, अल्ट्रावायलेट रे या फिर रेडिएशन आदि इसके लिए जिम्मेदार हो सकते हैं ।

ज्यादातर यह देखा गया है कि कैंसर शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता यानि इम्यून सिस्टम की कोशिकाओं को समाप्त कर देता है, परंतु कभी-कभी कैंसर की कोशिकाएं को इम्यून सिस्टम झेल नहीं पाता और व्यक्ति को कैंसर जैसी लाइलाज बीमारी हो जाती है ।

जैसे-जैसे शरीर में कैंसर वाली कोशिकाएं बढ़ती रहती हैं, वैसे-वैसे ट्यूमर यानि एक प्रकार की गांठ उभरती रहती है। यदि इसका उपचारसही समय पर न किया जाए तो यह पूरे शरीर में फैल जाता है।

कैंसर कितने प्रकार का होता है?

डॉक्टर्स और शोधकर्ता मानते हैं कि कैंसर 200 से भी अधिक तरह का होता है औरइसीलिए इनके लक्षण भी विभिन्न होते हैं। लेकिन इस लेख में सिर्फ उन्हीं कैंसर के बारे में बताएंगेजिन्होंने लोगों को बहुत तेजी से अपना शिकार बनाया है । चलिए जानते हैं कि वो कैंसर के कौन से प्रकार हैं –

ब्लड कैंसर

लोगों में सबसे तेजी से बढ़ने वाले कैंसर में ब्लड कैंसर सबसे आगे है। इस कैंसर में व्यक्ति के शरीर की रक्त कोशिकाओं में कैंसर पैदा होने लगता हैऔर इसी के चलते शरीर में रक्त की कमी हो जाती है और कैंसर बहुत तेजी से शरीर में संक्रमित होना शुरू हो जाता है।

फेफड़ों का कैंसर

फेफड़ों के कैंसर में व्यक्ति की स्थिति बहुत दयनीय और खराब हो जाती है। सांस लेने में परेशानी, बलगम जमने की दिक्कत, हड्डियों-जोड़ों में बेहिसाब दर्द और भूख ना लगना इसके प्रमुख लक्षण हैं । शरीर में भारी कमजोरी का आभास होता है । हर समय बेवजह ही थकान लगी रहती है । फेफड़ों के कैंसर के बढ़ने की वजह धूम्रपान है।

ब्रेन कैंसर

ब्रेन कैंसर व्यक्ति के सिर वाले भाग में पनपता है । ब्रेन कैंसर का ही दूसरा नाम ब्रेन ट्यूमर भी है । इस कैंसर वाले रोगी के दिमाग वाले भाग में एक ट्यूमर यानि गांठ बन

जाती है और यह गांठ समय के साथ-साथ बड़ी होने लगती है और धीरे-धीरे पूरे मस्तिष्क में फैल जाती है ।

स्तन कैंसर

स्तन कैंसर या जिसे ब्रैस्ट कैंसर भी कहते हैं, यह विशेषकर महिलाओं को होता है, परंतु ऐसा नहीं है कि यह पुरुषों को नहीं हो सकता । इस कैंसर से ग्रसित औरतों के स्तन में एक प्रकार की गांठ बननी शुरू हो जाती है, जो धीरे-धीरे समयानुसार बढ़ने लगती है । यदि इससे बचाव करना है तो नियमित रूप से स्तन की जांच करवाते रहें।

चर्म/ स्किन कैंसर

चर्म कैंसर यानि स्किन कैंसर के मामले भी देश में बहुत तेजी से सामने आए हैं । डॉक्टर्स का कहना है कि स्किन कैंसर बहुत अधिक गर्मी में रहने, उचित भोजन न करने और शून्य शारीरिक गतिविधि न करने से शरीर में पनपता है । स्किन कैंसर हर उम्र के व्यक्ति को हो सकता है ।

क्या करना चाहिए ?

कैंसर होने की स्थिति में क्या करें और क्या न करें, यह एक समस्या है, परंतु सबसे पहले क्या करना चाहिए, यह हम आपको बताते हैं । अपने नज़दीकी अस्पताल जाकर डॉक्टर से कंसल्ट करें । कैंसर और उसकी स्टेज जानने के लिए कुछ टेस्ट आवश्यक होते हैं और उन्हीं के दम पर डॉक्टर रोगी का आगे का इलाज करता है –

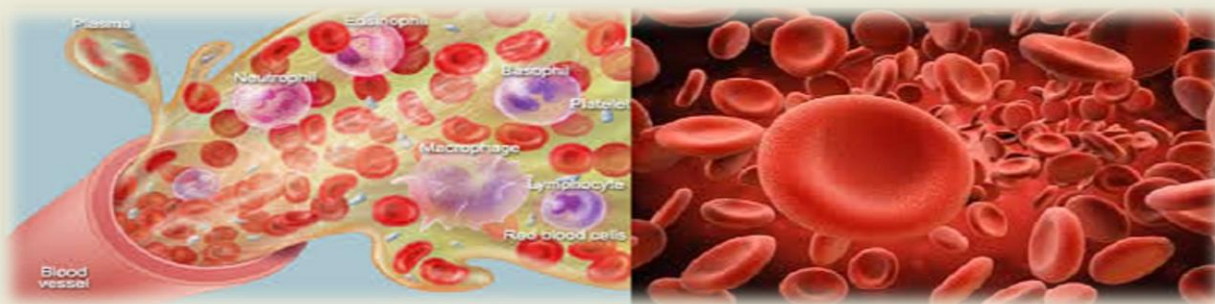
सीबीसी और डब्लूबीसी

सीबीसी टेस्ट से कैंसर की पक्की जानकारी नहीं मिलती परंतु आगे उपचार को किस दिशा में ले जाना है, यह पता चल जाता है। इस टेस्ट का खर्चा मात्र 400 रुपये है।

WBC अर्थात् श्वेत रक्त कोशिकाएं हमारे शरीर में किसी रक्षक की तरह काम करती हैं। यह शरीर को रोगों से बचाए रखती है। सामान्य और स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में 1क्यूबिक एमएल ब्लड में इनकी संख्या 4 हजार से लेकर 11 हजार होती है।

सीटी स्कैन और एमआरआई

सही और सटीक सीबीसी टेस्ट के बाद उपचार कराने के बाद भी अगर रिपोर्ट बेहतर नहीं आ रही तो डॉक्टर रोगी को सीटी स्कैन और एमआरआई करवाने का परामर्श देता है। सीटी



स्कैन और एमआरआई का खर्चा लगभग 5 हजार से शुरू होकर 7 हजार तक होता है।

हीमोग्लोबिन टेस्ट

इंसान के शरीर में ऑक्सीजन को संभालने वाले कण को हिमोग्लोबिन कहते हैं। यदि किसी की आयु 60 से अधिक है तो उसके शरीर में हीमोग्लोबिन की मात्रा 10 से नीचे नहीं रहनी चाहिए और अगर आयु 60 साल से कम है तो ऐसे में हीमोग्लोबिन की पुरुषों में मात्रा 14 से 17 और महिलाओं में 12 से 15 के बीच होनी चाहिए। यदि हीमोग्लोबिन इससे पैमाने से कम या बहुत ज्यादा है तो फौरन डॉक्टर से संपर्क करें।

बायोप्सी

यह कैंसर की संभावना को पक्का करने के लिए एक उपयुक्त टेस्ट है। बायोप्सी में रोगी के शरीर से एक सैंपल लिया जाता है। वैसे अधिकतर यह ट्यूमर हो सकता है लेकिन सैंपल

इस बात को कन्फर्म कर देता है कि ट्यूमर में जो कोशिकाएं हैं वह कैंसर की हैं या नहीं। बायोप्सी का खर्चा 5 हजार से 7 हजार के बीच होता है ।

कैंसर एक ऐसा रोग है, जो धीरे-धीरे हमारे शरीर में पनपता है और समय के साथ-साथ भयंकर रूप ले लेता है परंतु यदि समय पर इसके लक्षणों की पहचान कर ली जाए तो इसपर काबू पाया जा सकता है ।

(संकलित)



राजभाषा पखवाड़ा पर विशेष

मनीष चंद्र झा, कार्यालय अधीक्षक

14 सितम्बर को सभी केन्द्रीय पखवाड़ा मनाया गया। इस में अनेक रंगा-रंग सांस्कृतिक एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन एक त्योहार की तरह इसका हमलोग 14 सितंबर से पखवाड़ा त्योहार की तरह करते हैं और

क्या आपने कभी अंग्रेजी हुए सुना है ? आपका उत्तर नहीं विडंबना है कि आजादी के 75 अपने

सभी ने 14 सितंबर, 1949 को निर्णय लिया गया कि संघ के कामकाज के लिए हिंदी देश की सामान्य भाषा हो, इसकी लिपि देवनागरी हो और वे अंक काम में लाए जाएं, जिन्हें अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप कहा जाता है।

सरकारी कार्यालयों में हिंदी अवसर पर खड़गपुर कारखाना कार्यक्रमों, काव्य पाठ, प्रदर्शनी किया गया। बड़े धूमधाम से समापन किया गया। प्रत्येक वर्ष का आयोजन एक पर्व या फिर हम भूल जाते हैं।

दिवस या फ्रेंच दिवस मनाते में होगा। लेकिन हमारे देश की वर्षों के पश्चात भी हिंदी को

अस्तित्व बनाये रखने के लिए हिंदी दिवस, हिंदी सप्ताह एवं हिंदी पखवाड़ा जैसे बैसाखियों की

आवश्यकता पड़ रही है। यह भाषा अपने घर में एक मेहमान की तरह रही है, जबकि अंग्रेजी विदेशी भाषा होते हुए भी मेजबान की तरह हमारे रंग-रंग में रच बस गयी है। इसके लिए अंग्रेजी भाषा को दोष देना गलत है क्योंकि अंग्रेजों के समय में भी, भारत के प्रशासनिक कार्यों के लिए सिविल सर्विस के अधिकारियों के लिए हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं का ज्ञान अनिवार्य

माना जाता था। इन भाषाओं को पढ़ने के लिए विशेष पुरस्कारों की भी व्यवस्था थी। सन् 1880 में आदेश निकाला गया कि जनवरी 1881 से अदालती भाषा नागरी लिपि में लिखित हिंदी ही होगी। इस प्रकार देखते हैं कि अंग्रेजों के समय तक हिंदी ने साहित्य के साथ-साथ प्रशासन में अपना स्थान बना लिया था।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भी देश को एक सूत्र में पिरोने में हिंदी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। उल्लेखनीय है कि हिंदी को राष्ट्रभाषा को गौरव प्रदान करने वाले अधिक चिंतक और देशभक्त इतर हिंदी भाषी थे। इनमें बंगाल के केशवचंद्र सेन, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, महाराष्ट्र के बाल गंगाधर तिलक, गुजरात के स्वामी दयानंद सरस्वती और महात्मा गांधी के नाम उल्लेखनीय हैं।

हिंदी के विषय में नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने कहा था कि *“देश के बड़े भू-भाग में बोली जाने वाली हिंदी राष्ट्रभाषा की अधिकारिणी है”*

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, भारत के बहुभाषी देश होने के कारण, सबसे पहला प्रश्न भाषा और राजभाषा के संबंध में उठा। सन् 1946 में संविधान सभा का गठन हुआ। बाबू राजेन्द्र प्रसाद इसके अध्यक्ष चुने गए। इनकी अध्यक्षता में यह निर्णय लिया गया कि संविधान सभा के कामकाज की भाषा हिंदुस्तानी या अंग्रेजी होगी। उस समय एक वर्ग हिंदी का समर्थक था तो दूसरा हिंदुस्तानी का। लेकिन 14 जुलाई 1947 को संशोधन स्वीकृत कर हिंदुस्तानी के स्थान पर हिंदी शब्द स्वीकार कर लिया गया। फरवरी 1948 में संविधान का जो प्रारूप प्रस्तुत किया गया, उसमें राजभाषा का कोई उपबंध नहीं था, केवल इतना उल्लेख था कि संसद की भाषा हिंदी या अंग्रेजी होगी।

राजभाषा के बारे में मुख्य बहस अगस्त 1949 में हुई। बहस का मुख्य मुद्दा यह था कि हिंदी का स्वरूप क्या हो ? संविधान में कितने वर्षों तक अंग्रेजी चलती रहे और अंतर्राष्ट्रीय या भारतीय अंकों में किसे मान्यता दी जाए ? अंग्रेजी के चलते रहने की अवधि दस वर्ष पर्याप्त मानी गई। दूसरा पक्ष इसे पन्द्रह वर्ष तक बढ़ाना चाहता था। अंततः 1 अगस्त 1949 को डा. भीमराव अम्बेडकर ने अपना फार्मूला प्रस्तुत किया, जिसमें पन्द्रह वर्षों तक अंग्रेजी का प्रयोग बनाए रखने और अंतर्राष्ट्रीय अंकों की व्यवस्था रखी गई। उच्च न्यायालयों में अंग्रेजी चलती

रहेगी। प्रादेशिक भाषाओं की अनुसूची तैयार की जाए, जिसे आगे चलकर “आठवीं अनुसूची” की संज्ञा दी गई और भाषा आयोग की गठन की व्यवस्था रखी गई। अंतर्राष्ट्रीय अंकों को स्वीकार करने के बाद काफी बहस हुई। कई मतदान हुए, लेकिन कोई फैसला नहीं हो सका। इस संबंध में अगस्त-सितंबर 1949 में कई बैठक हुई। मौलाना आजाद, श्यामा प्रसाद मुखर्जी आदि राष्ट्रीय नेताओं ने सभा के सदस्यों को समझा-बुझाकर इस दिशा में एकमत होने का अनुरोध किया। पंडित नेहरू ने कहा- हिंदी का स्वरूप परित्यागमूलक हो और इसमें भारत की सभी भाषाओं के तत्वों का समावेश किया जाए। इस प्रकार संविधान में

सन् 1970 में सर्वोच्च न्यायालय ने राजनेता राज नारायण की याचिका पर सुनवाई करने से केवल इसलिए इनकार कर दिया था क्योंकि वह बहस हिंदी में करना चाहते थे।

सभी ने 14 सितंबर, 1949 को निर्णय लिया गया कि संघ के कामकाज के लिए हिंदी देश की सामान्य भाषा हो, इसकी लिपि देवनागरी हो और वे अंक काम में लाए जाएं, जिन्हें अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप कहा जाता है।

संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अंतर्गत संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी। संघ की शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा। 25 जून, 1975 को गृहमंत्रालय के अधीन राजभाषा विभाग की स्थापना की गई और राजभाषा अधिनियम 1963 व 1967 के प्रावधानों को व्यवहारिक रूप प्रदान करने के लिए अधिनियम की धारा 8 के अंतर्गत किये गए प्रावधानों को राजभाषा नियम 1976 के रूप में भारत के राजपत्र में 17 जुलाई 1976 को प्रकाशित किया गया।

राजभाषा नियम 1976 की अन्य प्रमुख बातें इस प्रकार हैं:-

- हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाएगा।
- केन्द्र सरकार के कार्यालयों में प्रयुक्त संहिताएं, नियमावलियां, फार्म, क्रियाविधि साहित्य आदि हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषा में तैयार की जाए।

लेकिन हमारे देश के सर्वोच्च न्यायालय, आजादी के इतने वर्षों बाद भी हिंदी के प्रति अड़ियल रवैया अपनाये हुए है। सन् 1970 में सर्वोच्च न्यायालय ने राजनेता राज नारायण की याचिका पर सुनवाई करने से केवल इसलिए इनकार कर दिया था क्योंकि वह बहस हिंदी में करना चाहते थे। तब से आज तक हिंदी के हक के लिए अनेक याचिकाएं दाखिल हुई, लेकिन सभी खारिज कर दी गई।

सन् 2004 में राजकुमार कौशिक का याचिका तो रजिस्ट्रार ने स्वीकार ही नहीं की,

क्योंकि हिंदी के अधिकार की पैरवी करने वाली याचिका हिंदी में थी। अंग्रेजी की तरफदारी के पीछे कोर्ट संविधान के अनुच्छेद 348 को हवाला देता है, जिसमें सर्वोच्च न्यायालय की कार्यवाही की भाषा अंग्रेजी कही गयी है। यह कानून सर्वोच्च न्यायालय यानी सुप्रीम कोर्ट को अच्छे से रटा है, लेकिन राजभाषा अधिनियम 1976 उनकी समझ में नहीं आता है, जिसमें संहिताएं, नियमावलियां आदि अंग्रेजी और हिंदी दोनों भाषा में तैयार करने का प्रावधान है।

हमारे देश के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद एवं चौथे राष्ट्रपति वी. वी. गिरि भी हिंदी भाषा के पक्षधर थे।

डा. राजेन्द्र प्रसाद ने कहा था कि जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।

वी. वी. गिरि ने कहा था कि हिंदी के बिना राष्ट्रीयता की बात करना व्यर्थ है।

साहित्यकार मैथिलीशरण गुप्त और समाज सुधारक आचार्य विनोबा भावे हिंदी को

राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। साहित्यकार मैथिलीशरणगुप्त ने कहा था- हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है, जिनके बल

पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है।

आचार्य विनोबा भावे ने कहा था- हिंदी को गंगा नहीं, बल्कि समुद्र बनना होगा।

अंग्रेजी भाषा के पैरवीकारों से मेरा प्रश्न है कि जापान जैसे छोटे किन्तु विकसित देश की राजभाषा जापानी है, ना कि अंग्रेजी। जापान जैसा छोटा देश अपनी राष्ट्रभाषा का प्रयोग करके विकसित हो सकता है तो हम क्यों नहीं। इसी तरह इजरायल भी एक छोटा सा देश हैं, उसकी भाषा हिब्रू हैं। यह देश अपने सभी कार्य अपनी मातृभाषा में करते हैं। यहाँ तक कि अमेरिका, जर्मनी आदि देशों में हिंदी और संस्कृत की पढ़ाई होती

है। आजकल उद्योग जगत भी अपने उत्पाद के प्रचार हेतु हिंदी भाषा का प्रयोग कर रहा है। खेल चैनल भी हिंदी की कमेंटरी पर

व्यापक स्तर पर जोर दे रहा है। वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और गृहमंत्री श्री अमित शाह भी अपना सारा भाषण हिंदी में देते हैं। सारा विश्व हिंदी की उपयोगिता और महत्ता समझकर महत्वपूर्ण कदम उठा रहा है, लेकिन हमारे देश के बुद्धिजीवी वर्ग हिंदी के साथ सौतेला व्यवहार कर रहे हैं, जबकि हिंदी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोले जाने वाली भाषा है। “चिराग तले अंधेरा “वाली कहावत यहाँ चरितार्थ होती है।

यदि हम हिंदी को विश्व के सिंहासन पर विराजमान होते देखना चाहते हैं तो हिंदी के साथ सौतेला व्यवहार छोड़ना होगा और हिंदी को दायम दर्जे की भाषा समझने की अज्ञानता छोड़नी होगी, तभी सही मायने में हिंदी का विकास होगा और यह बिना किसी बैसाखियों के दौड़

सकेगी।

14 सितम्बर, 1949 को हिंदी को भारत संघ की राजभाषा होने का संवैधानिक गौरव मिला। तब से सम्पूर्ण भारत में 14 सितम्बर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। खड़गपुर कारखाना में 14 सितम्बर से 21 सितम्बर तक हिंदी सप्ताह मनाया गया। 21 सितम्बर को हिंदी सप्ताह का पुरस्कार वितरण समारोह बड़े धूमधाम से मनाया गया। कर्मचारियों के लिए इस अवसर पर सप्ताह के दौरान हिंदी निबंध, हिंदी वाक् प्रतियोगिता, हिंदी टिप्पण व प्रारूप लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

पुरस्कार वितरण
खड़गपुर कारखाना
बिजय कुमार रथ
अधिकारी, श्री
का स्वागत स्तवक
अधिकारियों में
श्रीमती श्रेया



समारोह के मुख्य अतिथि
के मुख्य कार्य प्रबंधक, श्री
थे। उप मुख्य राजभाषा
अब्दुल हई ने मुख्य अतिथि
देकर किया। अन्य
कारखाना कार्मिक अधिकारी
शांडिल्य उप मुख्य यांत्रिक

इंजीनियर (डीजल) श्री आशुतोष कुमार, उप मुख्य बिजली इंजीनियर (इआरएस-पीओएच) श्री बाबुल बर्मन, उप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर (कैरेज) श्री पी.के. पटनायक, वरीय लेखाधिकारी श्री शंकर दूबे, उप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर (हल्दिया) श्री नरेन्द्र कुमार आदि उपस्थित थे।

हिंदी निबंध प्रतियोगिता, वाक् प्रतियोगिता व हिंदी टिप्पण व प्रारूप लेखन प्रतियोगिताओं के विजेताओं यथा श्री रमेश कुमार, श्री कमलेश कुमार, श्री प्रकाश रंजन, श्रीमती रेशमा तिकी, श्री सतीश जैसवार, श्री रुपेश कुमार, धीरेन्द्र कुमार पाण्डेय, श्रीमती अर्पिता दे, श्री सौरभ त्रिपाठी आदि को प्रशस्ति पत्र व नकद राशि देकर पुरस्कृत किया गया। श्री प्रकाश रंजन ने

अटल जी कविता “बधायें आती है तो आये”, श्री वीरेन्द्र पाण्डेय ने रामधारी सिंह दिनकर जी की कविता “सहनशीलता”, श्री तारकेश्वर शर्मा ने गजल, श्री रंजन कुमार ने... वीरों का कैसा हो बसंत.... का पाठ किया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में राजभाषा विभाग के प्रभारी श्री उपेन्द्र पासवान , कनिष्ठ अनुवादक वेद , व राजभाषा सचिवों में श्री मनीष चंद्र झा, श्री वीरेन्द्र पाण्डेय तथा वी श्रीनिवास, मदन कुमार आदि का योगदान सराहनीय रहा। मुख्य अतिथि श्री बिजय कुमार रथ तथा उप मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री अब्दुल हई दोनों ने कार्यक्रम की सफलता के लिए कर्मचारियों को बधाई।

प्रस्तुति- रंजन कुमार पुस्तकाध्यक्ष /एम डी जेड टी आई

डीजल आवधिक मरम्मत कारखाना की प्रथम मेमू रेक हुई रवाना तथा बैटरी डिस्चार्जर इकाई का किया निर्माण



कृष्ण पद बोस, सहायक कार्य प्रबंधक (डीजल)

डीजल आवधिक मरम्मत से जूझ रहा था। लोड की कमी को पूर्ण मुख्य यांत्रिक इंजीनियर, पी. के. मंडल प्रबंधक, बी. के. रथ ने डीजल आवधिक आवधिक मरम्मत का कार्य सौंपा और डीजल को पूर्ण करने का बीड़ा उठाया।

डीजल आवधिक मरम्मत (डीजल),

आशुतोष कुमार के नेतृत्व में ही टेलर

कोच के आवधिक मरम्मत का डीजल आवधिक मरम्मत कर्मशाला ने प्रथम मेमू रेक का आवधिक मरम्मत किया। यह रेक पूर्व तटीय रेलवे के खुरदा डिवीजन से संबंधित था। इसमें दो मोटर

कोच व छः टेलर कोच था। यह डीजल आवधिक मरम्मत कारखाना की बड़ी उपलब्धि थी। साथ ही साथ यह डीजल आवधिक मरम्मत कर्मशाला के सभी

सुपरवाइजर्स और कर्मचारियों के निपुण कार्यकुशलता का प्रमाण हैं जो डीजल लोको

आवधिक मरम्मत के साथ मेमू रेक के आवधिक मरम्मत का भी कार्य प्रमाणिकता

के साथ किया।

24 नवम्बर को प्रधान मुख्य यांत्रिक इंजीनियर पी. के. मंडल व मुख्य कार्य प्रबंधक बी. के. रथ ने ध्वजा लहराकर इस रेक को रवाना किया। कर्मशाला के

अधिकारियों, सुपरवाइजर्स व कर्मचारियों के सतत लगन से प्रसन्न होकर प्रधान



कर्मशाला विगत एक वर्ष से लोड की कमी

करने के लिए, दक्षिण पूर्व रेलवे के प्रधान

व खड़गपुर कारखाना के मुख्य कार्य

मरम्मत कर्मशाला को मोटर कोच के

आवधिक मरम्मत कर्मशाला ने इस कार्य

कर्मशाला ने उप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर

मोटर कोच के आवधिक मरम्मत के साथ

भी कार्य करने का निश्चय किया। इसी क्रम में



मुख्य यांत्रिक इंजीनियर महोदय ने दस हजार रुपये के पुरस्कार की घोषणा की। साथ ही

टी
इकाई
सिद्धांत
अनुकूल
प्रतिरोधक
था। नये
से कार्य
करने के
कर्मशाला
के लिए
इंतजार
समय
ही साथ



तकनीशियनों ने आंतरिक
स्त्रोतों का उपयोग करने घरेलू उत्पादों से नई बैटरी डिस्चार्जर इकाई बनाया। ये
प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आत्म निर्भर भारत की कसौटी पर खरा उतरता है।
उनके प्रगतिशील कार्य के लिए प्रधान मुख्य यांत्रिक इंजीनियर पी. के . मंडल ने
नाइजल नाग व टी रमाकांत को पुरस्कारस्वरूप दो हजार रुपये प्रदान करने की
घोषणा की।

डीजल आवधिक मरम्मत कर्मशाला के दो
तकनीशियनों नाइजल नाग व
रमाकांत ने बैटरी डिस्चार्जर इकाई बनाया। यह
विद्युत अपघटन के
पर आधारित हैं जो कि सुरक्षित व वातावरण के
हैं। पहले
को गर्म करके बैटरी को डिस्चार्ज किया जाता
बैटरी डिस्चार्जर
समय में बचत होती है। पहले इसी कार्य को
लिए बैटरी को दूसरे
में ले जाना पड़ता था और बैटरी डिस्चार्ज करने
अपनी बारी का
करना पड़ता था और इसमें लगभग चार दिन का
लगता था, साथ
अतिरिक्त जनशक्ति भी लगती थी। लेकिन दोनों

दक्षिण भारत का दर्शनीय व सांस्कृतिक पर्यटन

पर्यटन

मनीषा झा, लेखिका व यू-ट्यूब चलाकर



भारत एक विशाल देश है जो विभिन्न वर्ग, समुदाय और धर्मों से मिलकर बना है और विशेषकर हिंदू धर्म का गढ़ है, हमारा यह देश। जैसा कि हम जानते हैं कि हिंदू सनातन धर्म में विभिन्न देवी- देवताओं की पूजा की जाती है और पूजा स्थल मंदिर कहलाता है। वैसे तो

सम्पूर्ण

भारतवर्ष में कई छोटे-बड़े मंदिर मिल जायेंगे, परन्तु एक विशेष शैली के कारण उत्तर भारत और दक्षिण भारत के मंदिर के दृश्य कुछ भिन्न होते हैं। आज हम इन्हीं दक्षिण भारतीय शैली के मंदिरों पर प्रकाश डालेंगे।

हमने परिवार दक्षिण भारत के दर्शनीय व पर्यटन का कार्यक्रम तय किया था। गये थे। मेरे माता-पिता की हार्दिक इच्छा थी कि वे एक इच्छानुसार ही हमने अपना कार्यक्रम तय किया और दक्षिण इसी क्रम में सबसे पहले जिसकी स्थापना स्वयं भगवान श्रीराम ने की थी। इसी अपनी पत्नी सीताजी को रावण की लंका से लाने के लिए विजयश्री शिवलिंग बनाकर अराधना की थी। साथ ही साथ यह पर विजय पायी और

रावण का वध किया तो उन पर ब्रह्म हत्या का पाप लगा और इसी पाप से मुक्ति दिलाने के लिए ऋषियों ने इसी स्थान पर श्रीराम से भगवान श्रीराम की अराधना करने को कहा। इसी कारण रामेश्वर को शैव और वैष्णव मत का संगम माना जाता है। यह मंदिर भी द्रविड़यन शैली में बना है जिसमें मंदिर से भव्य यहाँ के द्वार होते हैं, जिन्हें गोपुरम कहा जाता है और दक्षिण भारत के प्रायः हर मंदिर में यही शैली देखने को मिलती है कि मुख्य मंदिर मध्य में होते हैं और चारों तरफ चार दिशाओं में बड़े-बड़े गोपुरम बनाए जाते हैं। रामेश्वर का यह मंदिर भारतवर्ष के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है।

इस मंदिर की एक और विशेष बात यह है कि यहाँ महिलाएं साड़ी पहनकर ही भीतर जा

सकती हैं और पुरुष श्वेत धोती पहन कर यानि आप भारतीय परिधान में ही मंदिर के भीतर प्रवेश कर सकते हैं।

संग इस वर्ष दूर्गापूजा के समय पर सांस्कृतिक मेरे संग मेरे पति और माता-पिता साथ बार दक्षिण भारत की यात्रा करें। उनकी भारतीय मंदिरों की यात्रा की। रामेश्वर के शिव मंदिर की बात करेंगे, रामेश्वर धाम में भगवान श्रीराम ने की इच्छा से भगवान शिव की बालु का भी माना जाता है जब श्रीराम ने लंका

चलिए अब बात करते हैं भारत के एक और विशाल मंदिर के बारे में और वह तामिलनाडु के त्रिचिरापल्ली शहर में स्थित भगवान विष्णु के मंदिर यानि रंगनाथस्वामी का मंदिर। यह मंदिर भारत के सबसे बड़े विष्णु मंदिरों में से एक है। यह मंदिर अलवर समुदायों का गढ़ रहा है। इस मंदिर की स्थापना चोल सम्राट के द्वारा ग्यारहवीं शताब्दी में की गयी थी। यह मंदिर 155 एकड़ क्षेत्रफल में फैला है और यह

यह मंदिर भी द्रविड़ियन बना है। चारों दिशाओं में गोपुरम बनाए गए हैं। अब बारी आती है वृहदेश्वर तंजोर जिले में स्थित है। मंदिर चोल साम्राज्य की यह मंदिर 217 फीट ऊँचा मंदिर को

एक है, जिसे यूनेस्को द्वारा है। इस मंदिर को “दक्षिण मंदिर की स्थापना चोल

राजराज चोल ने 1003 ईस्वी से 1010 ईस्वी के मध्य की थी। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। यहाँ का विशालकाय शिवलिंग श्रद्धालुओं को अनायास ही अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। इसी क्रम में एक और प्रमुख मंदिर है श्रीपद्मनाभ स्वामी का मंदिर, जो केरल राज्य की राजधानी तिरुवनन्तपुरम में स्थित है। यह मंदिर श्रीविष्णु भगवान को समर्पित है और वैष्णव मतानुयायियों का एक प्रमुख स्थल है। यहाँ पर भगवान विष्णु की लेटी हुई मुद्रा में काले पत्थर की प्रतिमा है। यह द्रविड़ियन शैली में बना हुआ है, परन्तु इस मंदिर से एक खास बात जुड़ी हुई है यह मंदिर विश्व की सबसे समृद्ध मंदिरों में से एक है। इस मंदिर के नाम के साथ इस शहर के नाम का इतिहास जुड़ा हुआ है। दरअसल में ट्रावनकोर राज्य के गठन के बाद यहाँ के राजा मार्तण्डेय वर्मा ने इसे भगवान श्रीपद्मनाभ स्वामी को समर्पित किया और मंदिर भी बनवाया। साथ ही साथ इस नगर का नाम रखा तिरुवनन्तपुरम, जिसका मलयालम भाषा में अर्थ है, “भगवान अनन्त का नगर”। इस मंदिर की एक और विशेष बात यह है कि यहाँ महिलाएं साड़ी पहनकर ही भीतर जा सकती हैं और पुरुष श्वेत धोती पहन कर यानि आप भारतीय परिधान में ही मंदिर के भीतर प्रवेश कर सकते हैं।

इस अभूतपूर्व और अतुलनीय यात्रा भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक धरोहर के बारे में सारी जानकारी प्राप्त हुई और इश्वर के दर्शन हुए और जो बातें हम किताबों में पढ़ते थे उसे जीवंत देखने का आनंद अवर्णनीय है। मेरे यात्रा व्लाग की जानकारी आप You Tube पर Manisha Food N Travel Studio को subscribe करके प्राप्त कर सकते हैं।



संसार का सबसे बड़ा हिन्दू मंदिर है। शैली में चार विशाल और भव्य गोपुरम अर्थात

मंदिर की जो कि तामिलनाडु के यह समृद्धि का जीता-जागता उदाहरण है। है। इस यूनेस्को की विश्वविरासत स्थलों में से संरक्षित किया जा रहा मेरू के नाम से जाना जाता है। इस सम्राट

भारतीय रेल का हिन्दी के विस्तार में योगदान

श्री सतीश चन्द्र जैसवार, लेखा सहायक, खड़गपुर कारखाना

(राजभाषा सप्ताह 2022 में द्वितीय स्थान प्राप्त निबंध)

जिस प्रकार भारतवर्ष में आर्थिक विकास और प्रगति में भारतीय रेल का योगदान रहा है, चाहें कृषि उत्पादों को देश के दूर-दराज इलाके तक पहुँचाना महत्वपूर्ण हो, प्रमुख बंदरगाहों को आपस में परस्पर जोड़ने का कार्य हो, ठीक उसी प्रकार हिन्दी के विस्तार व प्रचार में भी भारतीय रेल का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

भारतीय रेल अपने आप में वृहत्तम होने के कारण यह देश के एक छोर से दूसरे सुदूर प्रान्तों को जोड़कर हिन्दी के विस्तार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारतीय रेल उत्तर से दक्षिण व उत्तरपूर्व के न्यू तिनसुकिया स्टेशन से लेकर गुजरात के ओखा तक के लोगों को अपने में समेट कर लोगों को अन्य भाषाओं में साथ-साथ हिन्दी में जोड़ने का कार्य करती है। भारतीय रेल अपने विशाल रेलकर्मियों की संख्या के कारण भी हिन्दी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान करती है।

गैर हिन्दी राज्यों के निवासी जब रेल यात्राओं के दौरान आपस में अपने क्षेत्रीय व प्रादेशिक एडजस्टमेंट को साथ में लिए टूटी-फूटी हिन्दी में ही सही, जब आपस में वार्तालाप या विचार-विमर्श अथवा बातचीत करते हैं तब इससे भी हिन्दी का विकास व विस्तार सकारात्मक रूप से जरूर प्रभावित होता है।

एक आंकड़े के अनुसार भारतीय रेल में कुल लगभग सात हजार से ज्यादा स्टेशनों का नाम प्रादेशिक भाषाओं के साथ हिन्दी में लिखा जाना भी हिन्दी के विस्तार व प्रचार-प्रसार में भारतीय रेल की अहम भूमिका दर्शाता है। सम्पूर्ण भारत के सभी कार्यालयों, कारखानों व स्टेशनों पर सभी ऑफिस, पदनाम व बोर्ड को द्विभाषी (हिन्दी-अंग्रेजी) में लिखा जाना भी भारतीय रेल द्वारा हिन्दी के विस्तार के प्रति एक महत्वपूर्ण योगदान ही है।

केन्द्रीय गृहमंत्रालय के आदेशानुसार भारतीय रेल अपने सभी जोन के राजभाषा कार्यालयों को समय-समय पर हिन्दी के विस्तार व प्रचार-प्रसार के लिए आवश्यक कदम उठाती है। राजभाषा के नीतियों को प्रभावशाली ढंग से लागू करने की कोशिश करती है। इस कार्य में भारतीय रेल ने काफी सहायनीय कार्य किया है। गृहमंत्रालय के सहयोग से भारतीय रेल अपने रेलकर्मियों को हिन्दी पढ़ने लिखने के लिए राजभाषा विभाग के कार्यालयों द्वारा शिक्षा भी प्रदान किया जाता है। रेलकर्मियों को उनके अच्छे प्रगति

पर पुरस्कृत किया जाता है। रेल कार्यालयों में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन कर रेलकर्मियों को प्रोत्साहित करना भी भारतीय रेल द्वारा हिन्दी के विस्तार में एक अच्छा कदम है। केन्द्रीय व स्थानीय स्तर पर भी बहुत सारे लाभदायी और ज्ञानवर्धक कार्यक्रम हिन्दी के विस्तार में समय-समय पर भारतीय रेल संगठन उठाता है।

स्थानीय तौर पर हमारे खड़गपुर कारखाना के राजभाषा कार्यालय के रेलकर्मियों अपने अथक परिश्रम व प्रयास से खड़गपुर कारखाना के लगभग सभी रेलकर्मियों को हिन्दी में लिखने व पढ़ने में प्रशिक्षित किया है। राजभाषा कार्यालय के रेलकर्मियों हमेशा से तत्पर रहते हैं। किसी भी प्रश्न का हल, उदाहरण स्वरूप किसी अंग्रेजी शब्द या वाक्यों का हिन्दी अनुवाद तत्परता और सटिकता से देते हैं। हिन्दी टंकण सिखने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। उनका यह प्रयास हिन्दी के प्रचार-प्रसार की दिशा में अहम कदम है।

हिन्दी के विस्तार की आज की वर्तमान स्वरूप भारतीय रेल के अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान के बिना कल्पना करना भी बेईमानी ही होगी। भारतीय रेल की इस अहम योगदान का हिन्दी भाषा व राजभाषा सदैव आभारी रहगा।

इस तरह सम्पूर्ण रूप से हिन्दी के विस्तार में भारतीय रेल का योगदान एक अहम व अत्यंत महत्वपूर्ण है। आने वाले दिनों में भारतीय रेल हिन्दी के विस्तार व प्रचार-प्रसार के लिए और भी महत्वपूर्ण व प्रभावशाली कदम उठाएगी ऐसी आशा करता हूँ।

भारत में अंतरिक्ष कार्यक्रमों की शुरुआत 1962 से मानी जाती है। 1962 में ही भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान समिति का गठन हुआ था। वर्ष 1963 में केरल के निकट तिरुवनंतपुरम के निकट थुम्बा में स्थित रॉकेट प्रक्षेपण केन्द्र से अमेरिका द्वारा प्राप्त दो चरणों वाले रॉकेट को अंतरिक्ष में छोड़ा गया। 1969 में इस समिति का पुनर्गठन कर इसका नाम भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन कर दिया गया तथा विक्रम साराभाई को पहला अध्यक्ष बनाया गया। इस संगठन का प्रमुख उद्देश्य विभिन्न राष्ट्रीय कार्यों के लिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी को विकसित करना था। यह संगठन विक्रम साराभाई की दृष्टि से प्रेरित था, जिन्हें भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रमों का जनक माना जाता है।



भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन का मूल उद्देश्य दूर संचार, टेलीविजन प्रसारण, मौसम का अध्ययन, संसाधनों का सर्वेक्षण तथा प्रबंधन के क्षेत्र में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी विकसित करना एवं उन पर आधारित सेवाएँ उपलब्ध कराना और इसके उपग्रहों, प्रक्षेपण यानों, संबद्ध भू-प्रणालियों को विकसित करना था। आज विभिन्न देशों में नौ भूकेन्द्र हैं, जो भारतीय उपग्रहों से सूचना प्राप्त करते हैं। भारत के लिए गर्व की बात है कि विश्व बाजार में बेचे जाने वाले उपग्रह, डाटा में भारतीय डाटाका 5वाँ हिस्सा है।

वर्ष 1972 में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन को वित्तीय आधार प्रदान कर और सशक्त किया गया। इसके ठीक 3 साल बाद 19 अप्रैल 1975 को भारत ने अपना पहला उपग्रह “आर्यभट्ट” सोवियत रूस की मदद से अंतरिक्ष में छोड़ा गया। आर्यभट्ट के सफल प्रक्षेपण से प्रोत्साहित होकर भारतीय वैज्ञानिकों ने इनसेट श्रृंखला के उपग्रहों का निर्माण इनसेट 1A से इनसेट 1D तक अमेरिकी वैज्ञानिकों की सहायता से किया। लेकिन इस श्रृंखला के दूसरी पीढ़ी के उपग्रहों का निर्माण पूर्णतः स्वदेशी तकनीक द्वारा भारतीय वैज्ञानिकों ने किया। 1980 में रोहिणी लॉन्च किया गया। एसएलबी-3, भारतीय अंतरिक्ष यान द्वारा कक्षा में स्थापित किए जाने वाला यह पहला उपग्रह था। भारत के पूर्व राष्ट्रपति और मिसाइल वैज्ञानिक स्वर्गीय डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने इसरो में एसएलबी-3 परियोजना का नेतृत्व किया था। बाद में वे भारतीय मिसाइल कार्यक्रमों को निर्देशित करने के लिए डीआरडीओ चले गए।

भारतीय अंतरिक्ष वैज्ञानिकों ने अपने कौशल तथा नवाचार से देश को अनेक गर्व करने वाला क्षण दिया है। वर्ष 2014 में भारत मंगल ग्रह तक पहुँचने वाला देश बना। यह भारत का प्रथम मंगल अभियान था तथा

इसरो की एक बहुत ही महत्वाकांक्षी परियोजना थी। इस योजना का नाम MOM (मिशन मार्स ऑर्बिटर) था। यह मिशन काफी किफायती था इसकी कुल लागत महज 450 करोड़ रुपये थी। इस मंगलयान परियोजना के पूरा होने के ऐतिहासिक घटना का गवाह बनने के लिए खुद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी बौंगलूरु के इसरो केन्द्र में उपस्थित रहे तथा भारतीय वैज्ञानिकों को बधाई दिए। मंगलयान की सफलता ने पूरे विश्व का ध्यान अपनी ओर खींचा तथा इसरो ने वैश्विक स्तर पर अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में एक अलग पहचान बनाई। इस घटना के बाद दुनिया भर ने भारतीय वैज्ञानिकों की सफलता का लोहा माना क्योंकि इससे पहले किसी भी देश ने यह उपलब्धि हासिल नहीं की थी, कि पहली ही बार में मंगल की कक्षा में अपने अंतरिक्ष यान भेज सके। इस तरह नासा, सोवियत अंतरिक्ष कार्यक्रम के बाद इसरो लाल ग्रह यानि मंगल तक पहुँचने वाला चौथा अंतरिक्ष संगठन बन गया। 1917 में इसरो ने एक ही बहु-उद्देशीय परियोजना से 104 उपग्रहों को प्रक्षेपित कर विश्व रिकार्ड बनाया।

भारतीय वैज्ञानिक अपनी अंतरिक्ष विज्ञान की उड़ान को गति देते हुए चन्द्रमा तक पहुँचने की योजना बना रहे हैं। भारत चन्द्रमा का वह रहस्य उजागर करना चाहता है, जिनका अभी तक पता नहीं लगाया गया है। भारतीय वैज्ञानिकों ने अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के उपयोग में एक गति प्राप्त की है। दूर संचार तथा मौसम का अध्ययन के लिए दुनिया की सबसे बड़ी घरेलु बहु-उद्देशीय उपग्रह प्रणाली इनसेट के साथ-साथ दूर संवेदन प्रणाली के लिए विशालतम दूर संवेदन प्रणाली का जाल बिछाया गया है। देशवासियों को विश्वास है कि अब वह दिन दूर नहीं जब भारतीय उपग्रह चन्द्रमा तक पहुँचने में सफल हो जाएगा।

भारत आज विश्व का एक ऐसा विकासशील देश बन चुका है जो, विश्व के सर्वाधिक विकसित देश सोवियत रूस और अमेरिका के वैज्ञानिक शक्तियों तथा महत्वों से प्रतिस्पर्धा कर रहा है। आज संचार माध्यम के क्षेत्र में अंतरिक्ष विज्ञान की जो होड़ लगी है, उसमें भारत तनिक भी पीछे नहीं है। वास्तव में भारतीय वैज्ञानिकों की अंतरिक्ष के क्षेत्र में प्रगति देखने लायक है। इस उपलब्धि से भारतीय वैज्ञानिकों की अद्भूत प्रतिभा, साहस, धैर्य, क्षमता तथा जिज्ञासा की भावना प्रकट होती है। हमें इन वैज्ञानिकों के अपूर्व योगदान को पाकर अत्यंत गर्व तथा स्वाभिमान होता है।

किसान

प्रभात कुमार गुप्ता हिन्दी प्राध्यापक गृह मंत्रालय

चीर धरा की छाती को,
भूखों का करने कल्याण,
हाथों मे हल को थामे फिर,
खेती करने चला किसान ।

फटा वस्त्र और जीर्ण शरीर,
ना मिला ठीक से भोजन-नीर,
फिर भी न थमता कर्म महान,
खेती करने चला किसान ।

देखो कैसी विपदा आई,
डूब गई जो फसल लगाई,
नेताजी के वादों पर,
ठहराए अब दोनो कान,
खेती करने चला किसान ।

कभी मेहनत से जी न चुराया,
बीज-खाद दे फसल उगाया,
पर कीमत है धूल समान,
क्यों खेती कर रहा किसान।

